अन्तरा शब्दशक्ति

नवंबर 2018

मासिक वेब पत्रिका

सृजन के दीप से रोशन है साहित्य का

दीपोत्सव

www.antrashabdshakti.com

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,
सादर प्रणाम,
क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।
आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी, लेख, लघुकथा, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएँ आमंत्रित हैं।
आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) matrubhashaa@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में)को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-
साहित्यिक उपनाम-
जन्मतिथि
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)
शिक्षा-
कार्यक्षेत्र-
विधा -
मोबाइल/व्हाट्स ऐप -
प्रकाशन-
सम्मान-
ब्लॉग-
अन्य उपलब्धियाँ-
लेखन का उद्देश्य-
एक मौलिक रचना
ईमेल-
छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान, क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

प्रधान संपादक
डॉ.प्रीति सुराना *

तकनीकी सज़्पादक
डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सज़्पादकीय सलाहकार
श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
श्री संजय कोचर
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिज़्स
मृदुल जोशी
सुश्री मीना कौशल

राजकीय प्रतिनिधी
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जज़्मू एवं कश्मीर
रिखभचंद रांका- राजस्थान

***-पीआरबी एज़्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी हैं।**

अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-2 अंक-05 मूल्य-25 रुपए
नवंबर-2018

क्रं.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	4
2.	हिन्दी भाषा लाएगी....	5
3.	दीपोत्सव में बढ़ता चाईनीज....	7
4.	साहित्य एवं सिनेमा...	12
5.	कविता	13
6.	देश हित वाली दीवाली	14
7.	कविता	15-21
8.	हिन्दी अखबारों की...	22
9.	फिल्म समीक्षा	23

सभी पाठकों, इष्ट मित्रों, बंधुओं को दीपावली पर्व की

हार्दिक शुभकामनाएँ

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस ज़्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिज़्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु.

www.antrashabdshakti.com

संपादकीय

सृजन के दीप से रोशन है साहित्य का दीपोत्सव

डॉ. प्रीति सुराना
प्रधान संपादक

यशस्वी सूर्य अंबर चढ़ रहा है तुमको सूचित हो
विजय का पथ सुपथ पर बढ़ रहा है तुमको सूचित हो
अवाचित पत्र मेरे जो नहीं खोले तलक तुमने समूचा विश्व उनको पढ़ रहा है तुमको सूचित हो

कुमार विश्वास की इन पंक्तियों में सृजन की स्वमेव व्यवस्था और हिन्दी साहित्य के वैश्विक पटल पर स्थापित होने और हिन्दी के उत्थान के दीप के प्रज्जवलित होने के भाव निहित हैं।

साहित्य की दीपमालिकाओं में सृजनकारों के योगदान के दीप अट्टालिका बनकर हिन्दी के नक्षत्र को समूचे वैश्विक आलोक में मुखर और प्रखर कर रहे हैं।

वर्तमान समय में हिन्दी साहित्य अपनी समृद्धता को जाहिर कर रहा है। पर इसी के साथ वैज्ञानिक चिंतन, सामाजिक विमर्श और नवाचार की ओर कम अग्रसर भी है। ये पीड़ा भी कहें या विडंबना भी जिसके कारण कुछ स्थानों पर हमें सोचना भी पड़ रहा है और झुकना भी।

आखिर विडंबना के इस दौर में चिंता और चिंतन का समूचा दायित्व सृजनकारों के कंधों पर ही लटकता नजर आ रहा है। सृजन तो खूब हो रहा है, परन्तु साहित्याकाश में वो सृजन तारों की भांति प्रकाशित और प्रकाशवान नहीं हो रहा। हिन्दी के लिए चिंता की लकीरें इस बात की ओर इशारा कर रही है कि भविष्य के गर्भ में ''मलाल'' नाम का बीज जो पनप चुका है उससे कैसे छुटकारा पाया जाए। गंभीरता और गहनता का प्रादुर्भाव उस ''मलाल'' के बीज को प्रखर और प्रज्जवलित करता जा रहा है।

हिन्दी सेवकों का लगातार चलने वाला आह्वान भी भविष्य की चिंताओं को साफ तौर पर इंगित करता है।

कहने और सुनने वाले और आएंगे यह तो बंबई में बैठे गीत क़ी दुनिया के खलीफा साहिर लुधियानवी साहब बरसों पहले ही कह गए।

कल और आएंगे नगमों की खिलती कलियां चुनने वाले
मुझसे बेहतर कहने वाले तुमसे बेहतर सुनने वाले

सच ही तो कहा है, यदि आज भी हम न जागे तो कल फिर कोई और आएगा, पर ये क्रम कब तक चलेगा... सवाल तो ''मलाल'' के बीज का है।

बहरहाल, इन्हीं सब चिंताओं और चिंतन के बीच हम साहित्य के सृजनकर्ताओं का एक दायित्व यह भी बनता है कि हम साहित्य के दीपोत्सव में हिन्दी के उस दीप का प्रज्जवलन करें जिससे आलोकित भविष्य के नौनिहालों के साथ अनुगामी के तौर पर आने वाली पीढ़ी करें। खूब लिखें, खूब आंदोलित करें और हिन्दी का इतना प्रकाश फैलाएं कि जगमग सम्पूर्ण साहित्यलोक हो और प्रकाशवान हिन्दी जगत।

खूब मनी दीपावली। अब केन्द्र में साहित्य सृजन से हिन्दी लोक को जगमग करना हमारा लक्ष्य होना चाहिए।बतौर प्रकाशक अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन अपने इस दायित्व का निर्वहन करने का वचन देता है और बतौर सृजनकर्ता आपसे यह वचन भी मांगता है कि आपके लेखन में शोध, नवाचार, समाधान और सम्पूर्ण सम्प्रेषण होगा।

इसी के साथ नववर्ष मंगलमयहो...

हिन्दी भाषा लाएगी कश्मीर के पर्यटन उद्योग के अच्छे दिन

डॉ.अर्पण जैन
'अविचल'

प्रेम के गीत गुनगुनाने वाली मखमली आवाज़, जो जाफरान की तासीर से तरनुम बना देगी, कश्यप की घाटी, पानी की नगरी या शंकराचार्य की भूमि के रूप में, लालचौक से क्रांति कहती जमीं हो चाहे, डल झील से टपकते पानी की बात होगी, शिकारों और तैरनेवाले घर (हाउस बोट) की सर्द रातों को याद किया जाएगा, चश्मे शाही में पत्थरों से रिसते पानी की चाह होगी, मुगल गार्डन को जेहन में उतारा जायेगा, फूलों के महकने को जब जीवन में उतरता देखा जाएगा, तब बेशक वादी की बर्फ से लेकर कहवे की महक का जायका लेकर कश्मीर की क्यारियों को ही याद किया जाएगा।

समृद्धशाली इतिहास का झरोखा हो चाहे विस्तृत पौराणिक कहानियों में वादी का जिक्र, सभी जगह केवल प्रेम गीत ही गुंजायमान होते है, ऐसे धरती के स्वर्ग के जीवन यापन का मुख्य आधार यहाँ के सौदर्य को निहारने आने वाले पर्यटक ही तो है। पानी से निकलने वाला स्थान यानी कश्मीर जिसकी वादियों में बसा है समृद्ध इतिहास और यहाँ का सौदर्य स्वमेव ही पर्यटकों को आकर्षित करता है। प्राचीनकाल में कश्मीर हिन्दू और बौद्ध संस्कृतियों का पालक राज्य रहा है। माना जाता है कि यहाँ पर भगवान शिव की पतने देवी सती रहा करती थीं और उस समय ये वादी पूरी पानी से ढकी हुई थी। यहाँ एक राक्षस नाग भी रहता था, जिसे वैदिक ऋषि कश्यप और देवी सती ने मिलकर हरा दिया और ज़्यादातर पानी वितस्ता (झेलम) नदी के रास्ते बहा दिया। इस तरह इस जगह का नाम सतीसर से कश्मीर पड़ा। इससे अधिक तर्कसंगत प्रसंग यह है कि इसका वास्तविक नाम कश्यपमर (अथवा कछुओं की झील) था, इसी से कश्मीर नाम निकला। कश्मीर का अच्छा-ख़ासा इतिहास कल्हण के ग्रंथ राजतरंगिणी से मिलता है। प्राचीन काल में यहाँ आर्य राजाओं का राज था। मौर्य सम्राट अशोक और कुषाण सम्राट कनिष्क के समय कश्मीर बौद्ध धर्म और संस्कृति का मुख्य केन्द्र बन गया। पूर्व-मध्ययुग में यहाँ के चक्रवर्ती सम्राट ललितादित्य ने एक विशाल साम्राज्य क़ायम कर लिया था। कश्मीर संस्कृत विद्या का विख्यात केन्द्र रहा। कश्मीर शैवदर्शन भी यहीं पैदा हुआ और पनपा। यहां के महान मनीषीयों में पतञ्जलि, दृढबल, वसुगुप्त, आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कल्हण, क्षेमराज आदि हैं। यह धारणा है कि विष्णुधर्मोत्तर पुराण एवं योग वासिष्ठ यहीं लिखे गये।

स्थानीय कहानियों के माध्यम से यहाँ के लोगों का विश्वास है कि इस फैली हुई घाटी के स्थान पर कभी मनोरम झील थी जिसके तट पर देवताओं का वास था। एक बार इस झील में ही एक असुर कहीं से आकर बस गया और वह देवताओं को सताने लगा। त्रस्त देवताओं ने ऋषि कश्यप से प्रार्थना की कि वह असुर का विनाश करें। देवताओं के आग्रह पर ऋषि ने उस झील को अपने तप के बल से रिक्त कर दिया। इसके साथ ही उस असुर का अंत हो गया और उस स्थान पर घाटी बन गई। कश्यप ऋषि द्वारा असुर को मारने के कारण ही घाटी को कश्यप मार कहा जाने लगा। यही नाम समयांतर में कश्मीर हो गया। निलमत पुराण में भी ऐसी ही एक कथा का उल्लेख है। कश्मीर के प्राचीन इतिहास और यहां के सौंदर्य का वर्णन कल्हण रचित राज तरंगिनी में बहुत सुंदर ढंग से किया गया है। वैसे इतिहास के लंबे कालखंड में यहां मौर्य, कुषाण, हूण, करकोटा, लोहरा, मुगल, अफगान, सिख और डोगरा राजाओं का राज रहा है। कश्मीर सदियों तक एशिया में संस्कृति एवं दर्शन शास्त्र का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा और सूफी संतों का दर्शन यहां की सांस्कृतिक विरासत का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

मध्ययुग में मुस्लिम कश्मीर आए और यही के निवासी हो गये। मुसल्मान शाहों में ये बारी बारी से अफ़ग़ान, कश्मीरी मुसल्मान, मुग़ल आदि वंशों के पास गया। मुग़ल सल्तनत गिरने के बाद से सिख महाराजा रणजीत सिंह के राज्य में शामिल हो गया। कुछ समय बाद जम्मू के हिन्दू डोगरा राजा गुलाब सिंह डोगरा ने ब्रिटिश लोगों के साथ सन्धि करके जम्मू के साथ साथ कश्मीर पर भी अधिकार कर लिया। डोगरा वंश भारत की आज़ादी तक कायम रहा।

भारत का यह ख़ूबसूरत भूभाग मुख्यतः झेलम नदी की घाटी (वादी) में बसा है। भारतीय कश्मीर घाटी में छः ज़िले हैः श्रीनगर, बड़ग़ाम, अनन्तनाग, पुलवामा, बारामुला और कुपवाड़ा। कश्मीर हिमालय पर्वती क्षेत्र का भाग है। जम्मू खण्ड से और पाकिस्तान से इसे पीर-पांजाल पर्वत-श्रेणी अलग करती है। यहाँ कई सुन्दर सरोवर हैं, जैसे डल, वुलर और नगीन। यहाँ का मौसम गर्मियों में सुहावना और सर्दियों में बर्फ़ीला होता है। इस प्रदेश को धरती का स्वर्ग कहा गया है। एक नहीं कई कवियों ने बार बार कहा हैः गर फ़िरदौस बर रुए ज़मीं अस्त, हमीं अस्त, हमीं अस्त, हमीं अस्त।

इस इतिहास के बाद भी पर्यटन और हस्तशिल्प कश्मीर का परपंरागत उद्योग है। कश्मीर के प्रमुख हस्तशिल्प उत्पादों में काग़ज़ की लुगदी से बनी वस्तुएं, लकड़ी पर नक़्क़ाशी, कालीन, शॉल और कशीदाकारी का सामान आदि शामिल हैं। हस्तशिल्प उद्योग से काफ़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा अर्जित होती है। हस्तशिल्प उद्योग में 3.40 लाख कामगार लगे हुए हैं। उद्योगों की संख्या बढ़ी है। करथोली, जम्मू में 19 करोड़ रुपये का निर्यात प्रोत्साहन औद्योगिक पार्क बनाया गया है। ऐसा ही एक पार्क ओमपोरा, बडगाम में बनाया जा रहा है। जम्मू में शहरी हाट हैं जबकि इसी तरह के हाट श्रीनगर में बनाए जा रहे है। राग्रेथ, श्रीनगर में 6.50 करोड़ रुपये की लागत से सॉफ्टेवयर टेकनेलॉजी पार्क भी शुरू किया गया है। पर्यटन, कश्मीरी अर्थव्यवस्था का एक अभिनन्न हिस्सा है। धरती के स्वर्ग के नाम से मशहूर, कश्मीर के

पर्वतीय परिदृश्य सदियों से पर्यटकों को आकर्षित करते रहे हैं। डल झील, श्रीनगर पहलगाम, गुलमर्ग, यूसमार्ग और मुग़ल गार्डन आदि पर्यटकों को आकर्षित करने वाले स्थल है।

कश्मीर के पर्यटन उद्योग पर नज़र डाली जाए तो इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि कश्मीर में आने वाले पर्यटकों में बड़ा हिस्सा हिंदुस्तान के हिन्दीभाषी राज्यों से आता है। सरकारी आंकड़ों पर नज़र डाले तो भी यह बात सिद्ध होती है कि 70 प्रतिशत से ज्यादा पर्यटक हिन्दीभाषी होते है। और ऐसे में कश्मीरी यदि अपने राज्य में हिन्दी विद्यालयों का विरोध करेंगे तो निश्चित तौर पर वे अपने ही पैर पर कुल्हाड़ी मार रहे है। क्योंकि भाषा का किसी मजहब या जाति से कोई वास्ता नहीं होता है। कश्मीरी बच्चें यदि हिन्दी भाषा नहीं सीखेंगे तो कैसे वे हिंदुस्तानी पर्यटकों से संवाद स्थापित कर पाएंगे। जब संवाद में कठिनता होगी तो पर्यटक आना भी कम हो जायेंगे इसका उदाहरण दक्षिण भारत है। जहाँ संवाद माध्यम में हिंदुस्तानी भाषा का शामिल नहीं होना ही पर्यटकों को वहाँ न जाने पर मजबूर कर चूका है और बीते 3 दशकों में दक्षिण भारत के पर्यटन उद्योग पर भारी बट्टा लगा है।

यही हाल आने वाले समय में कश्मीर का भी हो सकता है क्योंकि जिस तरह कश्मीर में हिन्दी को लेकर हालत पैदा किए जा रहे है, बच्चों को हिन्दी न सिखने के लिए दबाव बनाया जा रहा है, यहाँ तक कि हिंदी के उत्थान के लिए कार्य करने वाली संस्थानों को सहयोग न करना, बैंक, रेडियों, शासकीय उपक्रमों द्वारा हिंदी की स्वीकार्यता पर प्रशन लगाना कश्मीर के भविष्य यानी समृद्ध पर्यटन पर हमला करना है।

और यदि कश्मीर में हिन्दी की स्वीकार्यता लाई जाती है और हिन्दी को बढ़ावा दिया जाता है तो वहाँ सांस्कृतिक समन्वय भी स्थापित होगा और इससे पर्यटक भी आना चाहेंगे और वर्तमान हालातों पर भी काबू पाया जा सकता है क्योंकि तब कश्मीरी केवल रोजगार की तरफ ही बढ़ेंगे, और व्यस्त व्यक्ति के पास लड़ाई-झगड़ों के लिए समय नहीं होता।

पर्यटन विभाग के अनुसार जुलाई 2015 और सितंबर 2015 तक लगभग 3 लाख पर्यटक कश्मीर आए, लेकिन इस साल इसी अवधि में पर्यटकों की संख्या न बराबर रही है। इस साल 1ली से 12 अगस्त तक की अवधि के दौरान 10,059 पर्यटक घाटी में आए जबकि पिछले वर्ष इसी अवधि के दौरान 89,243 पर्यटक कश्मीर आए थे। अब इसी पर गौर किया जाए कश्मीर की आधी समस्या सुलझाई जा सकती है। कश्मीर की सबसे बड़ी समस्या के मूल कारण में मंदा होता पर्यटन उद्योग भी है। यदि यहाँ पर्यटन पुनर्जीवित हो जाए तो संभवत कश्मीरियों की व्यावसायिक व्यस्तता उन्हें अन्य किसी झंझटों में उलझने नहीं देगी। और व्यावसायिक व्यस्तता के लिए कश्मीरियों को हिन्दी भाषा से जोड़ कर हिंदी में दक्ष होना होगा। अपने बच्चों को भी हिन्दी भाषा सिखने पर जोर देना होगा तभी कश्मीर के पर्यटन उद्योग के अच्छे दिन आ सकते है।

दीपावली का त्यौहार

दीपावली का त्यौहार भारतवर्ष में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाने वाला त्यौहार है।

प्राचीन मान्यता के अनुसार जब सतयुग में श्री रामचंद्र 14 वर्ष का वनवास हुआ था,तब अयोध्या वासी बहुत दुखी हो गए थे और चौदह वर्ष के लंबे अंतराल के बाद जब उन्हें प्रभु श्री राम के अपनी नगरी में पुनः आगमन का समाचार प्राप्त हुआ तो सभी बहुत प्रसनन हुए।

कार्तिक मास की अमावस्या को प्रभु श्री राम ने अपना चौदह वर्ष का वनवास खत्म करके अयोध्या नगरी में प्रवेश किया था।इस खुशी के अवसर पर अयोध्या वासियों ने अयोध्या को दुल्हन की भांति सजाया और घर-घर में दीप दान कर अपनी खुशी को व्यक्त किया।

तभी से हर वर्ष कार्तिक मास की अमावस्या को दीपावली का पर्व मनाया जाता है। यह कथा सतयुग की थी और अभी चल रहा है कलयुग चल रहा है।

कलयुग में प्रभु श्री राम को फिर से वनवास मिला है और ये वनवास भारत की अदालतों ने दिया है, जिस की समय सीमा अवधि भी तय नही।

पता नही कब अवधपुरी के लोग अपने श्री राम को पुनः उन की नगरी में देख पाएंगे,क्योंकि अयोध्या जो श्री राम की नगरी है।उस में बावरी मस्जिद और मंदिर निर्माण का झगड़ा समाप्त होने के आसार नही दिख रहे।

जहाँ बीजेपी सरकार 1990 से 'राम लाल हम आयेंगे, मंदिर वही बनायेंगे'का नारा सिर्फ और सिर्फ वोट बैंकिंग के लिए लगाती हैं।

जब बीजेपी सत्ता में आती है तो सारे वादे दरकिनारे कर दिए जाते है।बेचारी जनता जो वषी से अपने प्रभु राम को मंदिर में देखने की आस लिए वोटिंग भी करती और केस की सुनवाई भी होती है।पर फैसला आज तक ना हुआ ना ही होता नजर आता है।

'मिलती है तो सिर्फ तारीख पर तारीख'

इसी आस में कितनी दीपावली निकल गयी,सरकारें आयी और निकल गयी।पर ना मस्जिद का इंसाफ हुआ,ना मंदिर को न्याय मिला।।

कब अयोध्या में फिर से वही दीपावली मनाई जायेगी।।

संध्या चतुर्वेदी
अहमदाबाद, गुजरात

दीपोत्सव में बढ़ता चाईनीज हस्तक्षेप घातक है

उत्सवधर्मी हमारा देश! उत्सवधर्मिता हमारी और हमारे देश की पहचान!

मुश्किल घड़ी तब आती है जब हम अपनी पहचान भूलने लगते हैं। वो कहते हैं न कि अपना छोड़ कर दूसरे का सब अच्छा लगता है तो आज ऐसा ही हो रहा है। महँगा टिकाऊ होता है, पर सस्ते के लालच में भरमाये हम अपनी चीजों को छोड़ उन्हें लाते हैं। अच्छी बातें देर में जगह बनाती हैं, पर जब वो हमारे अंदर अपनी जगह बना लेती है तो स्थायी हो जाती हैं। इसके विपरीत बुराई जल्दी अपने पैर पसारती है। कुछ ऐसा ही है कि हम ऊपरी तड़क-भड़क, चमक-दमक के विदेशी रंगों की मोह-माया में भरमा गये हैं तभी चीनी बाजार ने हमारे यहाँ आकर व्यापार करने का साहस किया।

दीपोत्सव पर हमारी मिट्टी के दिये जलाने की परम्परा रही है। श्रीराम के चौदह वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वासियों ने दिये जला कर खुशियाँ मनाई थी... ऐसा लिखा मिलता है। पर कब और कैसे पटाखों ने अपनी जगह बनाई और कैसे बनाई.. कहना कठिन है। आज कुछ भी.. भारत मैच जीते, करवाचौथ, ईद का चाँद निकल आये, बारात आये,दिवाली कुछ भी... बम-पटाखों के बिना काम ही नहीं चलता।

बात हम दीपोत्सव की कर रहे है तो उसी परिप्रेक्ष्य में ही देखें। स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग के प्रति हमारा आग्रह होना चाहिए ताकि बाजार हमारा बढ़े, अर्थव्यवस्था हमारी मजबूत हो।चीन में बनी वस्तुएँ सस्ती होने के कारण अपनी ओर खींचती हैं.. इस आकर्षण में फँसने से बचें। ये आकर्षण हम भारतीयों के लिए कितना घातक सिद्ध हो रहा है इससे हम अनजान नहीं हैं, पर दूसरों से होड़ और दिखावे के चक्कर में हम समय, धन का तो नाश कर ही रहे हैं, गंदगी फैलाने और पर्यावरण को दूषित करने में आगे बढ़ कर सहभागी भी बन रहे हैं, जिसके दुष्परिणाम हमारी आगे आने वाली पीढ़ियाँ भुगतेंगी। तो भावी पीढ़ियों के लिए हम क्या छोड़ कर जाने वाले हैं... इस दृष्टि से कभी सोचा हमने?

दीपोत्सव पर चाइनीज बल्बों की लड़ियाँ, कंदील, दिए, सजावट की चीजें लाकर घर को सजा लेते हैं। अपनी महत्वाकांक्षाओं के चलते इस तरह हमने अपने को व्यस्त बना लिया है कि स्वयं करने का समय नहीं बचता। मिट्टी के दिये जलाने में मेहनत लगती है... उन्हें पानी में भिगोइये, सुखाइये, एक-एक दिये में तेल-बत्ती डालिये... तब एक-एक कर उन्हें जलाइये, इसी तरह सजावट की चीजें अपनी योग्यता-हुनर से बनाई जा सकती हैं। इतनी मेहनत करे कौन ?

मेरी माँ के घर में सदा मिट्टी के दियों ने घर को प्रकाशित किया। बत्ती भी माँ पंद्रह-बीस दिन पहले बना लेती , कुछ पकवान एक सप्ताह पूर्व बना लेती। आज तो बजट में सब मिलता है।

मेरे अपने घर में आठवीं कक्षा में पढ़ने तक बेटे को पटाखे चलाने, चाइनीज लड़ियाँ लगाने के जुनून पड़ोसियों की देखा-देखी रहा। जब वह नवीं कक्षा में आया और दिवाली आई तो हम सोच रहे थे कब यह बाजार जाने को कहेगा? पर उसने जो कहा उससे हम आश्चर्यचकित रह गये। उसने कहा कि मैंने तो पर्यावरण को दूषित करने और चीनियों को लाभ देने में बहुत कुछ कर डाला... पर अब नहीं। अब बम-पटाखे, चाइनीज लड़ियाँ बंद। मिट्टी के दिये ही हमारे घर को आलोकित करेंगे।

2009 की वो दिवाली से लेकर अब तक... मिट्टी के दिये ही हमारे घर को आलोकित करते हैं, बम-पटाखे आने का तो प्रश्न ही नहीं। चाइनीज बल्बों वाली लड़ियाँ जो थी,वो देकर समाप्त कर दी। अपने पड़ोस में हम ही हैं जो केवल मिट्टी के दियों की रोशनी से घर को जगमगाते हैं, बार-बार उनमें तेल डालते रहते हैं। अपने बेटे की इस परिवर्तित सोच ने हमें भी आश्चर्यचकित कर दिया था।

आज आवश्यकता है हमें अपनी सोच बदलने की, उस पर दृढ़ होने की, अपनी परम्पराओं और संस्कृति पर गर्व

अनुभव करने की , उसके बाद तदनुरूप आचरण करने की। सब करते हैं तो हम भी करेंगे.... इस सोच से भी बाहर निकल कर आचरण और कृत्य करना है। स्वयं आगे बढ़ कर अच्छा,नया और सही करने का उदाहरण रखें तो सही। आज नहीं तो कल तस्वीर बदलेगी ही।

चीनी बाजार दीपोत्सव ही नहीं , हमारे दैनिक जीवन को भी बुरी तरह से अपनी जंजीरों में जकड़ चुका है। मोमोज और चाऊमीन ने स्वास्थ्य पर कितना घातक प्रभाव डाला है उदासे हम सब परिचित हैं।समय रहते चेत जाने की आवश्यकता है अन्यथा दुष्परिणाम भुगतने के लिए तैयार रहना होगा.....समय, धन, स्वास्थ्य, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था सभी के परिप्रेक्ष्य में।

आइये....चिंतन-मनन कर सही के लिए हम सब मिल कर आगे कदम बढ़ायें और इस बार के दीपोत्सव से ही चीनी वस्तुओं का बहिष्कार करें और सादगी से, प्रेमभाव से अनूठा और अनुकरणीय दीपोत्सव मनायें।

डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई

दिवाली दीपों का त्योहार है । बड़ी ही श्रद्धा और भक्तिभाव से हम इस त्योहार को मनाते हैं । इस मिट्टी के दियों से पहले हमारा घर जगमगा उठा करता था , पर आज इनकी जगह चाइनीज़ दियों और तरह तरह की चाइनीज़ लाइटों ने ले है ।

ये मिट्टी के दिए केवल हमारे घरों को ही नहीं जगमगाते थे बल्कि इन दियों से हमारे मेहनत से दिए बनाने वाले कुम्हारों के घर भी जगमगा उठते थे । उनके परिवार का भरण पोषण का साधन होते थे दिए । पर आज इनकी जगह चाइनीज़ सामानों ने ले ली । इन चाइनीज़ दियों या लाइटों की चमक कुछ देर ही अच्छी लगती है पर हमारे मिट्टी के दियों के सामने ये चाइनीज़ लाइटों की चमक भी फीकी नज़र आती है ।

लोगों को चाईना का माल अच्छा लगता है क्योंकि वो सस्ता होता है और आकर्षक दिखता है जिसके कारण लोग खिंचे चले जाते हैं । लोगों को स्वदेशी सामान से ज़्यादा दूसरी चीज़ें लुभाती हैं पर वो ये नहीं सोचते कि हम अपने देश के मेहनत कर बनाएँ हुए सामान का अगर उपयोग करेंगे तो देश का पैसा देश में रहेगा और हमारे देश के उन ग़रीब कुम्हारों के घरों को हम रोशन कर पाएँगे जो महीनों दिए बनाते हैं और इंतज़ार करते हैं कि कब दीपों का त्योहार आएगा कब हमारा घर भी जगमगाएगा ।

वहीं चाइनीज़ फ़टाके लोगों को लुभाने लगे हैं जो मज़ा एक एक फटाके को फोड़ने में आता था वो अब कहाँ ? अब तो एक चाइनीज़ बम में आग लगी चार - छः आवाज़ें आई बस । कई बार तो ऐसा भी होता है फटाके फूटते ही नहीं फुस्ससस कर के ही रह जाते हैं पैसे पानी में चले जाते हैं।

इसलिए अगर हम ये कहे कि

दीपोत्सव में बढ़ता चाईनीज हस्तक्षेप घातक है तो यह कहना ग़लत नहीं ।

अदिति रुसिया,
वारासिवनी

यूं तो भारतीय बाजार पर 50इ चाइना का हस्तक्षेप है। कारण चीनी उत्पाद दिखने में अच्छे और कम कीमत में प्राप्त होते हैं ।

त्योहारों पर चीनी उत्पादों की बाजारों में भरमार होती है, खासकर दीपावली पर जहां पहले हम सिर्फ भारतीय उत्पादों का प्रयोग करते थे जैसे कुम्हारों द्वारा बनाए गए मिट्टी के दिये लक्ष्मी जी गणेश की मूर्तिय्यां आदि वहीं चीनी प्लास्टिक के दिए एवं विभिनन्-प्रकार की मूर्तिय्यों से बाजार पटा पड़ा है, जिससे गरीब तबके के कुम्हारों का हक मारा जाता है जो वर्ष भर त्योहार की आस लगाते हैं।

इसी तरह विद्युत उपकरणों में चाइनीस लाइटें आकाश दिए बल्ब रंग-बिरंगे बॉल, झूमर इत्यादि बाजारों में धड़ल्ले से बिकते हैं और बहुत ही कम कीमत में मिल जाते हैं, भले ही उसकी कोई गारंटी नहीं होती।

इसी तरह कपड़ा बाजार जहां दीपावली पर सभी नए वस्त्र आदि खरीदते है परंतु ऑनलाइन बाजारों ने छोटे व्यापारियों का गला घोंट दिया है।

खादय पदार्थों में भी चीन का बहुत हस्तक्षेप बहुत ज्यादा है यहां तक कि दूध में मेलामाइन की मिलावट, प्लास्टिक कोटेड चावल चॉकलेट, केक ,पेस्ट्री ने देसी मिठाइयों को पीछे छोड़ दिया है ,और महानगरों में आधुनिकीकरण की होड़ में ऑनलाइन या मॉल संस्कृति ने भारतीय संस्कृति को पछाड़ दिया है।

सौंदर्य प्रसाधन ,खिलौने आतिशबाजी ,सजावटी सामग्री आदि अत्यधिक मात्रा में चाइना से आते हैं और अधिक मात्रा में खरीदे जाते हैं।

अब प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य बनता है कि वह थोड़ा सा जागरूक हो देसी उत्पादों के प्रति प्रतिबद्ध हो ,हमें बहुत तेज चलने वाले बम नहीं अपने सुररु पटाखों और फुलझड़ियों में ही आनंद की प्राप्ति होना चाहिए।किसी गरीब से कुछ खरीद कर देखिए आपको आत्मिक सुख की अनुभूति होगी और अनजाने ही पुण्य कार्य और देशभक्ति भी।

नहीं तो वह दिन दूर नहीं जब छोटे दुकानदार दुकानें बंद कर आत्महत्या करने पर मजबूर हो जाएंगे ।

हम सभी जागरूक हो और अपने ही देश के उत्पाद उपयोग करें तो हम इस चाइनीस ड्रैगन को भारत से खदेड़ सकते हैं ।

कीर्ति प्रदीप वर्मा

भारत देश त्योहारों का देश रहा है और आज भी इस देश में त्यौहार पूरे उत्साह उल्लास और सद्भावना से बनाए जाते हैं।

इस देश में हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई सभी लोग एक दूसरे के लिए के धर्म, त्यौहार, पर्व, व्यक्तित्व आदि का उचित सम्मान और आदर करते हैं, यही कारण है कि अनेक संस्कृति के लोग यहां आकर बस जाते हैं और बसते ही नहीं बल्कि यहीं के होकर रह जाते रह जाते हैं।

हमारे देश में त्योहारों को पवित्रता, संस्कार, और सौहार्द की भावना से मनाया जाता है; इसी में दशहरा, दीपावली रक्षाबंधन, होली, ईद, मुहर्रम, क्रिसमस, प्रकाश पर्व यह सब निश्चित समय पर निश्चित उद्देश्य को लेकर मनाया जाते हैं।

दीपोत्सव का पर्व हिंदू सभ्यता और संस्कारों से जुड़ा हुआ है, कारण सबको पता है कि इस दिन भगवान श्री राम 14 वर्ष का वनवास व्यतीत कर वापस लौटे थे ।

उनकी वापसी में पूरी अयोध्या नगरी को दीपमालाओं से नगर वासियों ने प्रज्वलित कर दिया था।

जैन धर्म के हिसाब से इस दिन भगवान महावीर ने सुबह मोक्ष की प्राप्ति की थी और सायंकाल उन्हीं के शिष्य गौतम गणधर ने केवल ज्ञान प्राप्त किया था, प्रदीप्त किया था।

लेकिन आज यह त्यौहार हम लोगों की थोड़ी-सी कमी और थोड़े से आलस्य के कारण अपनी सभ्यता और संस्कृति से कोसों दूर हो गया ।

मुझे आज भी वह दिन बहुत अच्छे से याद है 'जब दीपावली के दिन से कुछ दिन पहले घर की सफाई हुआ करती थी और माँ, दादी, घर के बड़े लोग मिलकर शाम के लिए दिए की बाती एक दिन पहले ही बना कर रख लेते थे। लाई, मिठाई, पकवान तैयार किए जाते थे कि सब लोग घरों में आएंगे, दीपक जलाएंगे, दीपक जलाने के बाद थोड़ी बहुत उत्साह उल्लास में फुलझड़ी आदि जलायेंगे पर भौतिकता के इस युग में त्यौहार को ग्रहण लग गया और यह त्यौहार भौतिक पदार्थों के प्रदर्शन का त्यौहार बन गया।

घर के ऊपर जगमगाती रोशनी, घर में जलाए जाने वाले दिए अथवा पूजा की कोई भी सामग्री हो, सब कुछ हम सुविधा भोगी युग में अपनी सुविधाओं के हिसाब से तैयार चाहते हैं, आज हम जरा भी कष्ट नहीं उठाना चाहते; यही कारण है कि आज बाजार में चाइनीज सामान अधिक बिक रहे हैं ।

हम जैसा चाहते हैं, वैसा वह बना कर भेज रहे हैं और हमारे ही पैसे से कमाई करके अपने देश की मजबूती प्रदान कर रहे हैं और हम उनसे माल खरीदकर अपने देश को कमजोर कर रहे हैं।

बाजार में बिकने वाली हर चीज उपयोगी हो, सही हो

यह जरूरी नहीं है । जिस तरीके से चाइनीस बाजार ने भारतीय बाजार पर कब्जा किया हम भी उसके आदी होते चले गए और हमें भी वही दो-चार दिन चलने वाली चीजें ही पसंद आने लगीं। कम पैसों में कम खर्चे में हमने अपनी सभ्यता और संस्कृति से जुड़ी वस्तुओं, मिट्टी से बने हुए दिए, मिट्टी बनाने वाले लोगों की आजीविका को लगभग खत्म ही कर दिया है।

चाइनीज वस्तुओं का उपयोग करना सही है या गलत - यह मैं नहीं कह रहा, लेकिन त्यौहारों पर जिनके घरों में त्योहार हमसे ही होता है हमने उनके घरों में रोशनी की जगह अंधेरा करना शुरू कर दिया।

इसलिए मैं कह सकता हूं कि चाइनीस सामान का प्रयोग बिल्कुल ही गलत तरीके से किया जा रहा है ।

हमारे गांव में मिट्टी के बर्तन बनाने वाले परिवार के लोग बड़े सलीके से दो-चार दिन पहले घर में आते हैं, दिये रखते हैं, बदले में ?5-10 लेते हैं ।

वही परिवार मिट्टी के दिए बेच कर अपने परिवार का भरण पोषण करते हैं, त्यौहार मनाते हैं, अपने रीति रिवाज निभाते हैं ।

हमारा और आप सभी का यह नैतिक कर्तव्य है कि हम अपनी स्वदेशी भाषा, स्वदेशी वस्त्र और स्वदेशी वस्तुओं का ही उपयोग करें तभी हम देश के लिए, राष्ट्र के लिए अपने जन्म को सार्थक कर सकते हैं ।

इस दिवाली पटाखे ना फोड़कर, चाइनीस सामान न खरीदकर उन घरों में रोशनी फैलाएं, जिन घरों में कभी दिए जलते हैं और कभी नहीं।

आइए हम सभी इस संकल्पना के साथ त्योहार मनाएं

ना हम पटाखे जलाएंगे,
ना सामान चाइनीस लाएंगे।
दूसरों के घरों में जाकर
खुशियों की रोशनी फैलाएंगे।।

गणतंत्र ओजस्वी

ये तो सभी जानते है कि समय परिवर्तनशील है और समय के साथ बदली है इंसान की जरुरतें और शौक । आज हम चाइनीज समान को घरेलु छोटे उद्योगों के लिए खतरा मानते है बात सही भी है मेरी नजर में इस समस्या के निमन कारण हैः-

1-सरकार की उदासीनता-हमारे देश की सरकार इस बात को भलीभाँति जानती है कि चाइना का समान भरीतिय अर्थव्यवस्था और व्यापार को कितना प्रभावित कर रहा है और हमारे छोटे उत्पादको का इससे कितना नुकसान हो रहा है । साथ ही चाइना की यूज एंड थ्रो की नीति ने भी भारतीयों को जकड़ लिया है और इस आदत का दुष्परिणाम हमें तेजी से बड़ते ई कचरे के रुप में देखने को मिल रहा है । इस कचरे के अव्यवस्थित निपटान से जहा प्रदूषण बड़ता है वही क ई प्रकार की बीमारियां भी होती है । मेरे विचार से इस मामले में सरकार को समुचित कदम उठाना चाहिए ।

2-महगांई -लगातार बड़ती महगाई ने भी लोगो को चाईना आयटम की और आकर्षित किया है और भारतीय बाजार का सबसे बड़ा उपभोक्ता मध्यमवर्ग तो सस्ते से सस्ते की तलाश में रहता है ये स्वभाविक भी है आमदानी कम है और अभिलाषाएं ज्यादा ऐसे में चायना के सस्ते सामान सहज ही लोगों की पसंद बन जाते है ।

3-मुनाफाखोरी-चायना आयटम के थोक व्यापारियों का लालच भी इस समस्या का एक कारण है कचरे के दाम पर समान मगाकर ऊंचे दामों में बेचने से जहां बड़े व्यापारी मोटी कमाई कर रहे है वही बिल के समान बेचकर अर्थव्यवस्था को भी चूना लगा रहे है ।

4-चमक-दमक-चायना समान की चमक दमक और डिजाइनों का अनोखापन भी एक बड़ा कारण है । जहां भारतीय सामान्य दिखने वाली 100बल्ब की झालर 200से300रूपये तक की है वही चायना मल्टी फंग्शन झालर बाजार में 70से75 रूपये में उपलब्ध है । यही हाल अन्य हजारों आयटम का है ।

5-कुटीर उद्योग एंव गृह उद्योगों के प्रति उदासीनता-

बड़े सपनें देखो, बड़ा काम करो,बड़ा सोचोगे तो बड़े आदमी बनोगे इस सोच ने और इस शिक्षा ने छोटे उद्योगों का नास करके रख दिया पहले लोग मोमबत्ती और दिये से पैकिंग करके हजारों देशी आयटम बेचते थे मगर आज सबको चाहत है चायना की सस्ती पैकिंग मशीन या फिर देश में ही बनी महंगी बड़ी आटोमेटिक पैकिंग मशीन की अब न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।

कुलमिलाकर हमारी उदासीनता,हमारा लालच,हमारी सुरसा अभिलाषाएं और हमारी दिखावटी देशभक्ति और झूठी शान दिखाने की आदत ने देश के अंतिम व्यक्ति तक चायना का सामान पहुंचा दिया जहाँ पहुचने का असफल प्रयास भारतीय राजनीतिज्ञ आजादी के बाद से अब तक लगातार कर रहे है।

नवीन जैन अकेला

विषय पर बात करने से पूर्व मै एक प्रशन का उत्तर चाहती हूँ वह यह है कि कोई हमारे जीवन में हस्तक्षेप कब कर सकता है? उत्तर है जब हम स्वयं किसी को ऐसा करने दें। दीपावली आती है और हमें चायनीज वस्तुएँ दिखने लगती है जैसे बाकी समय चायनीज वस्तुओं को कोई उपयोग ही नही करता। सरकार पर उंगलियां उठने लगती है कि सरकार के कारण चायनीज बाज़ार भारतीय बाजार पर भारी पड़ता है किंतु खुद की आदतों को बदलने के लिए कोई तैयार नही है। ये तो बिल्कुल वैसी ही बात है कि शराब की दुकानों को सरकार बंद नही कर रही जबकि सरकार को पता है कि शराब जीवन को कितना नुकसान पहुचाती है लेकिन इसका अर्थ यह तो नही की सभी शराब का सेवन करने लगें। बिल्कुल उसी तरह जब सभी को पता है कि चायनीज वस्तुएँ देश की अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा रही है फिर भी उन्हें क्यों खरीदा जाता है? आवश्यकता है स्वयं को बदलने की और जागरूकता फैलाने की।

इस दीवाली पर नहीं इस दीवाली से ये प्रण करना चाहिए कि चायना के सामान का बहिष्कार करेंगे, जिस दिन चायना का सामान भारत मे बिकना बंद हो जाएगा भारत के लघु उद्योग कुछ हद तक पटरी पर आ जायगे। कुछ हद तक इसलिए क्योंकि भारतीयों के पास अभी तक इतनी उनन्त तकनीक नहीं है कि चायना के समान सस्ती वस्तुएँ नहीं बना सकें।

यदि पूरा देश ठान ले कि चायना का सामान नही खरीदेंगे तो बहुत जल्द संभव है कि हम अपने लघु उद्योगों को जीवनदान दे सकेंगे।

आशु जैन

सपना

सपना मेरा है ऐसा चारो ओर हरियाली हो।
हो सदा होंठों पे हँसी और नित्य दीवाली हो।

भूखा प्यासा रहे न कोई और कोई बेबस न फिरे।
हर कुटिया में दीप जले अंधकार से नहीं घिरे।
ईर्ष्या द्वेष को मन से निकालें औ घमंड घर खाली हो।

सपना मेरा यह भी माँ वृद्धाश्रम में न रोवे।
जिसको जन्म दिया माँ ने वो नजरों से दूर न होवे ।
रख लो किसी भी कोने में झाड़ू पोंछे करके पाली हो।।

बेटी राधा बेटी मीरा कोख में न मारी जाये।
देवों को गोद खिलाने वाली भारत भू पर फिर से आवे।
आँगन को महकाने वाली या बंदूक उठाने वाली हो।।

अब दहेज की होली में बेटी धू-धू कर न जले ।
इस दानव का अंत हो अब नहीं किसी के दिल में पले।
बेटी तो देवी की मूरत खुसियाँ लाने वाली वो।।

छू लें बेटियाँ आसमान को हर क्षेत्र में जाकर के।
खेल जगत में सीमा पर भी दिखा दें तिरंगा फहरा कर के।
बेटियों की न लुटे आबरू खुद ही खुद की रखवाली हो।।
हो सदा होंठों पे हँसी और नित्य दीवाली हो ।

केवरा यदु'मीरा'
राजिम (छ.ग.)

डॉ वासिफ क़ाज़ी
इंदौर

'साहित्य एवं सिनेमा- एक दूजे के पर्याय'

साहित्य, समाज का पथ प्रदर्शक होता है , उत्कृष्ट सृजन, स्वस्थ सामाजिक परिवेश का निर्माण करता है । साहित्य का उद्देश्य जनमानस में नवचेतना का संचार करना है और सिनेमा, वर्तमान परिस्थितियों के चित्रांकन का सशक्त माध्यम है । फिल्मकार, अपने सिनेमा के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं वर्जनाओं को अभिव्यक्त कर , जनसाधारण को अपनी विचारधारा से अवगत करा सकता है । साहित्यकार? के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती उत्कृष्ट और सार्थक सृजन की होती है ताकि उसके द्वारा रचित साहित्यिक कृति , मानवीय मूल्यों से परिपूर्ण हो एवं शोषण का प्रतिकार करने का सामर्थ्य रखती हो । हिंदी सिनेमा, प्रारंभ से ही विचारों का संवाहक रहा है जिसने समय समय पर ऐसी सामाजिक संदेश देने वाली फ़िल्में, समाज को दी है जो मील का पत्थर सिद्ध हुई है । हिंदी साहित्य के दैदीप्यमान नक्षत्र फणीश्वरनाथ रेणु के सुप्रसिद्ध उपन्यास मारे गए गुलफाम पर बासु भट्टाचार्य ने तीसरी कसम फिल्म का निर्माण किया जो काफी रोचक प्रयोग रहा । सिनेमा की सार्थकता, साहित्य के स्तर पर निर्भर करती है । मुंशी प्रेमचंद की कहानी पर मोहन भवनानी ने मजदूर नामक फिल्म का निर्माण किया । साहित्य और सिनेमा एक दूसरे के पूरक हैं , दोनों एक दूजे के बिन अस्तित्वहीन है । सिनेमा को हमेशा से अर्थपूर्ण कहानियों की प्रतीक्षा रही है । साहिब बीवी और गुलाम, भी हिंदी सिनेमा में मील का पत्थर सिद्ध हुई वो भी विमल मित्र के उपन्यास पर आधारित थी जिसे गुरूदत साहब और अबरार अस्वी ने कलात्मक स्वरूप प्रदान कर दिया । अमृता प्रीतम का उपन्यास पिंजर , बंटवारे की विभीषिका का दारूण चित्रण प्रस्तुत करता है जिसे निर्देशक चंद्र प्रकाश द्विवेदी ने बेहतरीन तरीके से रुपहले पर्दे पर पेश किया । सिनेमा, साहित्य के बिना अपेक्षित उननति नहीं कर सकता । विशाल भारद्वाज ,जो अंग्रेजी उपन्यास पर फिल्म बनाने में माहिर है उन्होंने शेक्सपियर के नाटक ओथेलो पर ओमकारा जैसी फिल्म बनाई । साहित्य,स्वांत सुखाय के लिए प्रतिबद्ध है परंतु सिनेमा सामाजिक सोच का प्रतिबिंब है जो समाज के सच को भी उजागर करने का सामर्थ्य रखता है । साहित्य को पढ़ने वाले उतने नहीं है जितने सिनेमा को देखने वाले । चेतन भगत के उपन्यास फाइव प्वाइंट समवन को सिर्फ उन्होंने पढ़ा है जो अंग्रेजी जानते हैं लेकिन इस तरह के विचारोन्मुखी साहित्य पर जब थ्री इडियटस जैसे सिनेमा का सृजन होता है तो वह ऐतिहासिक बन सामाजिक चेतना का शांतिदूत बन जाता है ।

साहित्य, समाज का दर्पण है तो सिनेमा , समाज की आवश्यकता। सिनेमा और साहित्य, स्वस्थ समाज के आधार स्तम्भ है । आर के नारायण के उपन्यास पर आधारित गाइड फिल्म भी चर्चित फिल्म रही है अपने दौर की । सिनेमा के पर्दे पर चमक, साहित्य की स्याही ही ला सकती है ।

मजदूर

कृति गुप्ता
नई दिल्ली

अपनी अभिलाषाओं के,
मजदूर हैं हम सभी।
करते है दिन-रात मेहनत,
रूकते भला कहां कभी?
इच्छाओं आकांक्षाओं के किले
फ़तह करने की ये दौड़..
भागते जा रहें निरंतर,
पीछे सर्वस्व छोड़ !
और क्या है मेहनताना,
इस ङदिन-रातङ की मजदूरी का?
क्या है पैमाना नापने को
खुद से खुद की दूरी का??
मुझको भी बतला देना तुम
जो पता चले इस कस्तूरी का।

कैसा कलयुग

उठो हमारे देश वासियो,
कैसा कलयुग आया है ,
नेता बैठे ऐसी में ,
श्री राम हमारे तम्बू में,

दुनियाभर को देने वाले,
न्याय की आस मे बैठे हैं
कोई नेता तो ऐसा आये,
एक ईट लगा दे मँदिर मे,

मँदिर मँदिर की बातें करते,
वोट माँगते जनता से,
चुनाव जीत जाते ही,
बैठ जाते दिल्ली मे,

अयोध्या जिनकी जन्मभूमि है,
उनको ही बिठाते तम्बू में,
स्वर्ण सिहाँसन जिनका रहता,
अमृत बरसाते नैनों से,

उन्हीं कमल नयनों का,
अभिषेक कराते फटे तम्बू से,
जिनके वापस आने पर,
हर घर दीप प्रज्वलित होते,
खुशियाँ मनाते घर घर में,
वही हमारे श्री राम बैठे अंधेरे कमरे में...
कब तक अत्याचार करोगे.....
इन भगवानों पर,

वोट माँगने माथा रगडते,
चले आते इन्हीं आस्था के चौखटों पर,
जीत के बाद एहसान जताने कोई न आते ,
इन मँदिर के दरवाजों पर,

मँदिर मस्जिद की राजनीति छोडो ,
भगवान को आजाद करो,
न्यायालय से बाहर निकालो,
उनको भी मुक्त करो,

वहां भी दिया जला दो
जो अंदर दिया जलाते हैं
उनको मत रखो अँधेरे में,
जो दुनिया को रोशन करते हैं,

जागो हमारे देशवासियों,
भगवानों पर तो रहम करो,
हिम्मत है तो फटे तम्बू को अलग कर ,
सोने का छत्र चढाओ मँदिर में

अर्चना कटारे,
शहडोल (म.प्र.)

दिवाली शुभ हो देखो हंस न देना...

(1) रंगीली (अपने पति से)- सुनोजी, पिछली दिवाली पर आपने मुझे लोहे का पलंग गिफ्ट किया था, तो इस बार क्या करने का इरादा है?

रंगीला- सोच रहा हूं इस बार उस पलंग में करंट छोड़ दूं ताकि मेरी दिवाली शुभ हो जाए।

(2) पति-पत्नी और खाली बोतल

पत्नी- आपने तो कहा था कि दिवाली के दिनों में शराब बिलकुल नहीं पिएंगे?

पति- हां, हां कहा था, लेकिन रॉकेट चलाने के लिए खाली बोतल तो चाहिए ना!

(3) चांद-सितारों की डिमांड

रमन (अपने दोस्त से)- अगर इस दिवाली पर तुम्हारी गर्लफ्रैंड तुमसे चांद-सितारों की डिमांड करती है तो? इतना कहकर रमन चुप हो गया।

तभी चमन बोला- तो एक रॉकेट खरीदकर, उसे उस पर बिठाकर रॉकेट को आग लगा दो...।

(4) बुरा न मानो दिवाली है!

चिंटू- एक बार 'बुरा न मानो होली है!' यह कहकर किसी ने मुझ पर रंग फेंक दिया था...।

पिंटू- फिर तुमने क्या किया?

चिंटू- 'बुरा न मानो दिवाली है!' यह कहकर मैंने उस पर 'बम' फेंक दिया। आज पूरा मोहल्ला मुझे ढूंढ रहा है...!

देशहित वाली दिवाली

पूनम कतरियार

मेरे दोनों बच्चों को ही छुटपन से दीवाली बहुत पसंद है. सजा-संवरा घर -शहर, तरह-तरह के पकवान,और दोस्तों के संग पटाखे छोड़ने का बेसब्री से सालभर इंतजार करते रहते थे.किशोरावस्था में आने के बाद बड़े- बेटे को सजावटी -वस्तुओं का नया शौक चढ़ा रहता था.मेरे लाख समझाने पर भी औरों की देखा-देखी वह जिद करके बाजार से बिजली की झालरें, कंदील, पटाखे आदि खरीद लाता था.बात पिछली दीवाली की है.हमलोग दिवाली पर घर गये थे.चूंकि, हमारे घर महापर्व 'छठ' होती है,और वह दिवाली के चौथे -दिन से प्रारंभ हो जाती है, तो हमलोग दिवाली में घर नहीं जाकर 'छठ' में ही घर जाते थे.लेकिन,इस बार मां 'छठ' नहीं करनेवाली थी तो हमलोग दिवाली पर घर चले आये.यद्यपि बच्चे आना नहीं चाहते थे.बुझे -मन से बच्चे हमारे साथ आयेंगे.हमारा घर झारखंड में एक छोटा-सा कस्बा है.वहां महानगरों की चकाचौंध तो नहीं है,परंतु आवश्यकता के समस्त चीजें मिल जाती है.मेरा बेटा वहां भी सजावटी सामान, झालरें ,कंदील ,पटाखे आदि ढूंढने बाजार में गया.आश्चर्य, वहां कागज की कंदीले, मिट्टी के दीए, हमारे जमाने के पटाखे मिल रहे थें.जब उसने तफ्तीश की तो पता चला कि वहां दूकानदारों ने देशहित में चायनीज वस्तुओं का

?बहिष्कार किया हुआ है. इस खबर से वह थोड़ा मायूस भी हो गया और अपनी दादी से कहने लगा कि पता होता तो पटना से ही कुछ सामान लेते आते.खैर, दिवाली की वह प्रतीक्षित रात भी आ गयी. घर-बाहर, पास-पड़ोस सभी जगह चावल के आटे,गेरु तथा गुलाल से रंग-बिरंगी रंगोली, रंग-बिरंगे दीयों की रोशनी, रंग-बिरंगे कागज़ों की कंदीले,देशी फुलझडियां-चकरी,मिरचइया- बम(बच्चों के शब्दों में सिकों)और उल्लसित,शांत-सौम्य वातावरण...कुल मिलाकर एक अनिर्वचनीय सिन्ध दीपावली थी.बच्चों को भी खूब मज़ा आ रहा था.अड़ोस-पड़ोस में लोग आ-जा रहे थे,घर की बनी शुद्ध देशी -घी एवं दूध की मिठाइन्यां,खीर आदि खा-खिला रहे थे.बच्चों ने बिना किसी रिश्तेदारी के इतनी सहृदयता,इतना अपनापन पहली बार पाया था. लौटने के दिन बच्चे फिर से मायूस थे.छोटे बेटे ने कहा,'भैया पहली बार लगा कि 'अपना' किसे कहते हैं न!'इतनी कम उम्र में इतनी बड़ी बात! लेकिन,अभी 'क्लाइमेक्स' बाकी था.बड़ा बेटा दादी के पांव छूकर बोला, थैंक्यू दादी,छठ-पूजा में तो यहां बहुत मज़े करते थे, किंतु यहां की दिवाली का भी कोई जोड़ नहीं है.अब मै भी केवल देशी दीयों और पारंपरिक मिठाई वाली , देशहित वाली दीवाली मनाऊंगा.और हां,अपने दोस्तों को भी ऐसी दीवाली मनाने के लिए प्रेरित करूंगा....पर्यावरण के संरक्षण के लिए धूएं एवं आवाज वाले पटाखों से भी मैंने तौबा कर ली...मम्मी सही कहती है कि,उसी की वजह से हमें खांसी आती है और आंखों में जलन भी होता था.

?दादी की बूढ़ी आंखें नम होआयी..तुम्हारे पापा सैनिक स्कूल से पढ़ाई किये है . तुमसे भी यही उम्मीद थी.खूब खुश रहो बेटा ..हमलोग लौटकर पटना आ गयें.छुट्टियां खत्म होते ही बड़ा बेटा हॉस्टल चला गया.यह उसकी दादी से अंतिम मुलाकात थी.चार महीने बाद, मां का अचानक स्वर्गवास हो गया.जो बातें मै इतने सालों से बच्चों को समझा नहीं पाई थी, जाते-जाते मां एक बार में समझा गयीं.पिछले साल की दीवाली हमलोग की मधुर-स्मृति में सदैव विराजमान रहेंगी...खासकर दोनों बच्चें भूल नहीं पायेंगे.

'दीपों का त्यौहार है आया'

त्यौहारों का मौसम आया ,
पकवानों ने घर महकाया,
मिलजुलकर शुगन मनाओ जी,
दीपों का त्यौहार है आया ।।
गुजिया मठरी सेव पापड़ी,
माँ दादी मिलकर बना रहीं,
चुन्नू -मुन्नु दोनों सोच रहे,
इसी कारण भूख सता रही।।
मन पर काबू अब कैसे पायें,
दीदिया हमको धमका रही,
गणपति लाल खायेंगें पहले
बार - बार कहकर चिढ़ा रही।।

बीना शर्मा 'झंकार'

प्रीति सुराना
वाराणसिवनी

दीपशिखा

हाँ!
जला रही हूँ
जाने कब से
तन को बाती
और
मन को तेल बनाकर
क्योंकि संस्कार
खुद जलकर
रोशनी बिखेरने के ही
दौड़ते है रगों में,..

प्रेम में समर्पण
माना
दायित्व है मेरा
पर अखरता है
कभी-कभी
तुम्हारा दीया होना
जब-जब
दिख जाता है
जरा सा झुकते ही
'दीया तले अंधेरा',..

फिर सोचती हूँ
कसौटियों में कसे हुए
मुहावरे
हर परिस्थिति में
खरे ही उतरते है
तो
अपेक्षा क्यूँ?
शिकायत क्यूँ?
बगावत क्यूँ?,..

तब करती हूँ
फिर से संकल्प
अग्निशिखा सा ही रहना है
मेरा जीवन
तो ज्वाला नहीं
बल्कि
बनकर रहूँगी हमेशा
तुम्हारे जीवन की
'दीपशिखा',..

जिससे उठती लौ
लपट बनकर कुछ भस्म नहीं करेगी
बल्कि
उर्ध्वगामी होकर करेगी रोशन
हमारे आशियाने को
जिसमें हमारा प्रेमदीप होगा
एक कोने में
जिसके तले अंधेरों का साया
कभी हमारे अपनों पर नहीं पड़ेगा।

अब तुम्ही तय करो
क्योंकि
जलो न सही
तपते तो तुम भी हो
मेरे जलने के ताप से
फिर
हमारे बीच ये सामंजस्य
सचमुच प्रेम ही है न???
बोलो न,....!!!

'समय का पहिया'

समय का पहिया चला जा रहा,
ये साल बीता चला जा रहा।।

किसकी खुशियों को बाँटा है हमने,
किसके ग़मों को साझा किया है,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।

किसने जख्म कुरेदे हमारे,
किसने घावों पे मलहम लगाई,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।

किसने शतरंज की बाजी बिछाई,
किसने जीत हमें है दिलाई,
ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।

है सुख-दुःख तो ईश्वर का खेला,
ये दुनिया तो है एक मेला,
ये भी हमको बता जा रहा,
ये साल बीता चला जा रहा।।

कितनी सामाज सेवा की हमने,कितने हाथ है अपने बढ़ाये,
किसको छोड़ा है बेसहारा,ये भी हमको बता जा रहा,
समय का पहिया चला जा रहा।।

साधना छिरोल्या
दमोह (म.प्र.)

मेरा ऊपरी श्रृंगार

हेमंत बोडिया

प्रमाण है तुम्हारे अस्तित्व का...
मेरे श्रृंगार से जुड़ा है
तुम्हारा होना
तुम्हारा ना होना..!

मैं एक नोटिस बोर्ड हूँ ..
तुम्हारी बेहतरी का..
गोया तुम्हारी धड़कनो की
ई.सी.जी. रिपोर्ट हूँ मैं ..!

और मेरा अस्तित्व...
किसी बंधे हुए सागर की
तरह, मेरे अंदर हिलोरें मार रहा है..
जिसकी एक भी लहर
नहीं आने देती मैं दुनिया के सामने..

हाँ ..कभी कभी
पूनम की रात में उठने वाले
ज्वार की तरह...
आँखों से छलक जरूर जाती हैं..
इस सागर की कुछ बूँदें ..!!
मेरे अंदर है मेरी दुनिया..
दबी हुई ..किस्मत में लिखे
कर्तव्यों के बोझ से...
सोचती हूँ ..कभी कभी..
तुमसे मेरा श्रृंगार ज़िंदा है..
या मेरे श्रृंगार से है हिफाज़त
तुम्हारे जीवन की..!!

मैं भी अपनी सरहदों पर
लड़ती हूँ ङदिन-रातङ
एक लड़ाई..
रखना होता है मुझे भी
चौकसी..ताकि
कोई न कर पाये पार
मेरी सरहदों को..!

मेरे अंतर्मन के युद्धों को,
उनमें होने वाली मेरी जीत को
कोई नहीं देख पाता..
कोई मेडल या पदक
नहीं होता मेरे लिये..
कौन जानता है ..??
एक सैनिक की पतने के
द्वारा विजय किये गये
अंतर्मन के युद्धों को...!!

तकदीर

साधना मिश्रा

दीप जले उर में
अंतर है घायल
मन-पंछी गगन उड़े
हो करके पागल।

लहर-लहर लहरों में
अंदर खोती जाऊँ
ऊपर-नीचे हो कर भी
थाह कहीं ना पाऊँ।

ईश्वर ने बांटे जब
मानव को तकदीरें
आगे चलकर खड़ी
बनी न भाग्य लकीरें।

भाग्यवादी बन बैठी
रही कोसती नसीब
कर्म सामने ही बैठा
आकर मेरे करीब।

दुनियाँदारी देखा
तब समझ आया
भाग्य तो मेरे हाथों
फिर कर्म अपनाया।

दिन-रात जूझकर
पसीना खूब बहाया
अपने हाथों से मैंने
तकदीर है बनाया।

दिन और रात हमारे...

मिलते रहे हैं हम दिन- रात की तरह,
मचलें हैं लो अरमां,जज्बात की तरह...

एक दूसरे में खो जाते है फिर हम,
गल जाए मोम उसी हालात की तरह....

मिलता सुकुंन चैन हमको भी तब,
गुम जाते बातों में दो बात की तरह....

तुम तुम न रहे और हम हम न रहे,
इतने पास हो गए इक जात की तरह...

सदियों से हम एक पर जानते न थे,
बदले न गये किसी तालुकात की तरह

आनंद पाण्डेय 'केवल'

पश्चिमी सभ्यता की

रमा प्रेम शांति
बालाघाट

पश्चिमी सभ्यता की
एक छोटी सी चिंगारी ने
तेज लपटो के साथ
मिलकर पूरे भारत देश में
फैलने का काम किया है
फिर फैली ऐसी आग
जिसने भारतीय सभ्यता को
पूरा नाश किया है
सबसे पहले हमारी
निज भाषा पर हमलाकर
अपनी भाषा बुलवाया है
चाइना , विदेशी सामानो की
बिक्री का (बड़े व्यापारी लोग)
भारतीयो के द्वारा ही पूरा
इंतजाम करवाया है
अपने भारतीय पर्वों में ही
स्वदेशी चीजों का
अपमान करवाया है
दिन - रात गरीब करते
मेहनत और बनाते देशी वस्तुएं
फिर भी ना ये पूरी बिकती है
ऐसे में और गरीबी
मेरे भारत की दिखती है
पाठ पढ़ाने वाले को
क्यों नहीं ये गरीबी दिखती है
भारतमाता की जय बोलने से
नहीं काम चलता है
काम करो देश हित में
जय जयकार
अपने आप होती है ।

बाबू जी! शुभ हो दीवाली.....

बाबूजी!शुभ हो दीवाली,आओ दीये ले जाओ लौट रहे हो खाली-खाली,
आओ दीये ले जाओ।

यह दीये चिकनी माटी के,और हमारी महनत के
लाएँगे घर में खुशहाली, आओ दीये ले जाओ।

इन दीपों को ले लो बाबू, थोड़ी सी कीमत देकर
जगमग हो पूजा की थाली,आओ दीये ले जाओ

वैसे तो बाजार भरा है, तरह तरह के दीपों से
इन दीयों की बात निराली,आओ दीये ले जाओ

इन्हें बेचकर खील बताशा फूल नारियल ले लूँगा और फुलझड़ी सस्ती वाली,
आओ दीये ले जाओ।

बच्चों को कपड़े ले लूँगा, वह भी खुश हो जाएँगे
नाचेंगे दे-दे कर ताली,आओ दीये ले जाओ।

किसी तरह बस थोड़े में हम, दीपावली मना लेंगे
जैसी पिछले साल मना ली,आओ दीये ले जाओ

राजेन्द्र श्रीवास्तव
विदिशा म.प्र.

ले लो ले लो तुम दीये
मिट्टी के ये सुगढ़ दीये
रोज तड़के से मैं उठ जाता
कुदाली ले खदनिया जाता
बीता-बीता खोद-खोद कर
मुट्ठी भर-भर मिट्टी उठाता
डबोरी भरता आश लियेड
डले लो ले लो तुम दीयेड
गाँव मेरे न तालाब न कुआँ
कठिनाई से पानी मिले वहाँ
सूखे पत्ते लड़की भूसा कंडा
जलते कम होता धुआँ-धुआँ
डनयनों से बस नीर बहेड
डले लो ले लो तुम दीयेड
एक-एक करके दिये पकाऊँ
कितने सपने नैनो में सजाऊँ
अम्मा की दवा बेटी के कपड़े
कुछ कमा सकूँ तभी ले पाऊँ
घर मेरे भी जलें दीये
ले लो ले लो तुम दीये

रेखा ताम्रकार 'राज'

दस दोहे दीपावली के

शुभकर यह शुभकामना, देता अमित सहर्ष।
स्वच्छ स्वस्थ जगमग रहे, अपना भारतवर्ष।-१

वर्ष 'शरद' को दे गया, खुशियों की सौगात।
दीपों की दीपावली, देती तम को मात।-२

मात तिमिर को दे सदा, हर्षित होता दीप।
यूँ मोती बनता अमित, मिटकर नन्हा सीप।-३

सीप कहे सुनिये सभी, परहित करिये काज।
तेल सहित बाती जले, दीपक पर सब नाज।-४

नाज करें जनगण अमित, गर सबको लें जोड़।
राजमहल की लालसा, मत कुटीर को छोड़।-५

छोड़ व्यर्थ बातें अभी, करो नहीं संदेह।
खुशियों का अवसर यही, अमित लुटाओ स्नेह।-६

स्नेह संपदा साथ जब, बनती बिगड़ी बात।
अभिनंदन 'श्री' आपका, स्याह अमावस रात।-७

रात रमा आराधना, इस दीवाली पर्व।
अंतर का जब तम मिटे, तभी स्वयं पर गर्व।-८

गर्व अमित होगा अगर, रखें स्वच्छता साथ।
खूब पटाखा फोड़िये, झाड़ू भी रख हाथ।-९

हाथ भलाई में उठे, फिर क्यों हो संघर्ष।
हृदय द्वार को खोलिये, स्वागत करें सहर्ष।-१०

कन्हैया साहू 'अमित'
भाटापारा (छ.ग.)

कार्तिक माह अमावस को
प्रतिवर्ष दिवाली आती है।
वसुधा शांत शुद्ध शीतल हो
मंद मंद मुस्काती है।।

चौदह वर्ष राम वन रुककर
अवधपुरी जब आये थे।
हर्षित होकर तब नगरी में
मंगल दीप जलाये थे।
रामचरित की पावन महिमा
हमको याद दिलाती है।
वसुधा शांत शुद्ध शीतल हो....

घनघोर तिमिर से लड़ने की
इक दीप चुनौती देता है।
उसके साहस को देख तिमिर,
मस्तक नीचे कर लेता है।।
नन्हे दीपक से शौर्य पाठ
दीवाली हमें पढ़ाती है।
वसुधा शांत शुद्ध शीतल हो....

साफ सफाई करते सब ही
अपने घरों दुकानों की।
गणपति लक्ष्मी को ध्यावत हैं
पूजा करें खजानों की।।
शारद यम कुबेर सुरेश की,
स्तुति दुनिया गाती है।
वसुधा शांत शुद्ध शीतल हो....

अर्थ व्यर्थ बर्बाद करो नहीं
तुम बारूदी राखों में।
स्वयं धूल मत झोंको 'मानस'
तुम अपनी ही आँखों में।।
इस बारूदी विष से वायु
और धरा मुरझाती है।
वसुधा शांत शुद्ध शीतल हो....

विनोद तिवारी 'मानस'

ढल रही हूँ .....

हर दिन कुछ ढल रही हूँ।
कुछ सीख रही हूँ
कुछ समझ रही हूँ,
हाँ,
मैं थोड़ा बदल रही हूँ,
उलझनें,
सुलझाते सुलझाते,
दर्द को अपने,
छुपाते छुपाते,
संभल के ,झिझक के,
कदम,
बढ़ाते बढ़ाते,
हर दिन कुछ ढल रही हूँ।
माना सब कुछ ,
कहाँ मिलता है,
हर शख्स को,
इस संसार में।
पल दो पल के,
सुकून की तलाश में,
हर रोज एक,
इदीयाङ जला रही हूँ,
इदीयेङ की बाती बनकर,
पल पल मैं भी,
जल रही हूँ,
हर दिन कुछ ढल रही हूँ।
दिल्लगी कोई खेल नहीं,
यह मजाक भी नहीं,
भरोसा और उम्मीद है यह,
कोई व्यापार नहीं,
क्यों भरोसे को मेरे,
तोड़ा जाता है हर बार,
छली जा रही हूँ,
टूट रही हूँ,
हर दिन कुछ ढल रही हूँ।

पिंकी परुथी 'अनामिका'

ज्योति पर्व

ज्योति पर्व आ गया
आज द्वार-द्वार पर।
दीप जगमगा गया
आज द्वार-द्वार पर
आंनद सब छा गया
आज द्वार-द्वार पर।।
(१)
बैर भाव छोड़ आज
मिल रहे गले सभी।
राग द्वेष से परे
झूमने लगे सभी।
सज रहे हैं फूल हार
हर गली हर द्वार पर।।
आज अंधकार भी
प्रकाश में बदल गया।।
(२)
जगमगा रहे है आज
दीप प्रेम प्रीत से।
मिल रहे नयन भी आज
मन से मन के मीत से।
आज इस खुशी ने
सब घाव दिए भर।
आज गम के बादलों से
मैं पार पा गया।।

कैलाश मंडलोई
खरगोन म.प्र.

निश्चल मन मे स्वच्छ हंसी ....

हाथों मे ले दीप दीवाली
इन्तजार मे है माँ.....
लेने आये दीप माटी के ...
नैनों मे भर प्रेम निष्ठा से ...
मेरी मेहनत से बने दीप माटी के
रोशन कर दे घर आगँन सब ...
अन्धकार मिट जाये हर घर...
इन्तजार मे है कब बिक जाये उसके हाथो बना दीप भी ....
बाती सा जीवन उसका पर
आस की ज्योति जलाए है ...
हो जाये उजाला घर उस के भी....
बच्चे रंग बिरंगे कपड़े पहने ....
मिठाई ,खील ,बताशे खाये ...
उन के मन भी खुशी के दीप जले ..
धूम धाम से बने दीवाली ....
खुशियो की बहार रहे .....।
पलक बिछाये बैठी है ....
संजोये है सपने मन मे ...
उसके घर का मिटेगा अन्धेरा ....।

बबीता कंसल

भारत वतन मेरा

देख वीरो की बलदानी -
खून मेरा भी खोला है।
आज दिल मेरा भी मचला -
देख बसंती चोला है।
मेरा देश ही-
मेरी जान है।
इसके लिए एक जीवन क्या,
हजारो भी कुर्बान है।
खाकी का रही हूँ
देश का सिपाही हूँ
देश की मिट्टी ही मेरी चादर है।
मिट्टी ही मेरी आन ।
देश का जवान हूँ
न मैं बेईमान हूँ
मैं तो चलता -
भारतीय सेना का सम्मान हूँ।

सुरेन्द्र कल्याण

मुझे मेरी रात

वसुंधरा राय

दीप बनकर जलती रही मेरी रात
नागिन बन डसती रही मुझे रात
दूर दूर रहते हो मगर फिर भी
तेरे साथ महकाती रही मुझे रात
दुख सुख के अनुभव हैं अनेक
तेरी याद दिलाती रही मुझे रात
कुछ खास रिश्ता जुड़ा है मन का
सदियों बाद हँसाती रही मुझे रात
अनछुए प्रेम को कैसे समझाऊं
मन से मन छूती रही मुझे रात
मतभेद बहुत हैं तुमसे मेरे प्रिय
कह तुमसे लड़ती रही मेरी रात
मेरे गीतों के तुम शब्द हो
तुम्हे गुनगनाती रही मेरी रात

आज के दौर की तालीम

आज के दौर की तालीम जो सरकारी है ,
उससे क्या फ़ायदा वो तो बस बाज़ारी है ।
काम आती है आग पेट की बुझाने को ,
है नही क़ौम की परवाह न जिम्मेदारी है ।
होड़ सी है मची डिगरी को हड़प लेने की
, देश में भीड़ है हर ओर बेरोज़गारी है ।
पा गया नौकरी वो कर रहा है ऐश मगर ,
इसलिये लूट मार और काला बाज़ारी है ।
कह रहे जिसको सभी लोकतंत्र वो भी तो ,
वोट की राजनीति आँकड़ो की बाजीमारी है।
कैसे सुधरेंगे ये हालात यही सोच के हम ,
मशविरा कर रहे हैं मेरी समझदारी है ।
डा0 नीलिमा मिश्रा

डा. नीलिमा मिश्रा

आज का विषय

आंगना लिपाय लियो
आई आज दीवाली है
दीप लडियां सजाओ
आई आज दीवाली है।

लक्ष्मी आईं द्वार
कर सोलह श्रृंगार
बजाओ शंख झांझ
आई आज दीवाली है।

मंगल कलश जलाओ
कपूर धूप थाल सजाओ
रखो गुड़ धानी प्रसाद
आई आज दीवाली है।

होगी धन की बरसात
खुलेंगे स्वर्ग द्वार
मनाओ खुशियों का त्योहार
आई आज दीवाली है।

लक्ष्मी-गणेश के संग संग
जगमग होत आंगना
द्वार बंदनवार बांधना
आई आज दीवाली है।

आरती सजाओ
शुभ गान मधुर गाओ
दीप सजाओ द्वार-द्वार
आई आज दीवाली है।

किरण मोर
कटनी म.प्र.

दीप जला लीजिये

अमावस्या रात हो,
अंधेरा मिटा दीजिये।
सूर्य के ही दूत सब,
दीप सजा लीजिये।

दीप जला लीजिये

वह पूर्ण है ,पूर्ण वैभव,
पूर्णता का राज्य है।
अपूर्णता के द्वार पर,
वह नृप पहरेदार है।
हम अधूरे दीप है,
प्रेम बिन माटी ढ़ले।
मित्रता मे डूबकर,
बाती जला लीजिये।

दीप जला लीजिये।।

न बैर भेद भाव है,
न राग द्वेश भावना।
तमस का बन प्रहरी,
कर रहा वह साधना।
हम अहम के दीप है,
ईष्या के संग जले।
काम क्रोध जीतकर,
बाती जला लीजिये।

दीप जला लीजिये।।

रोशनी का जो प्रतीक,
तमस का भी मीत है।
चाँद तारे ले रहे जो,
वह सूर्य की ही धूप है।
हम अकेले दीप है,
परछाई से भी डरे।
स्वार्थ भाव छोड़कर,
बाती जला लीजिये।

दीप जला लीजिये।।

रचना सक्सेना
इलाहाबाद

आओ हम तुम दीप जलायें

दीपमालिका का ये पावन,
पर्व जो आया है ।
संग में अपने ये अनगिन सी,
खुशियाँ लाया है ।।

आओ हम तुम दीप जलायें,
अंधकार को दूर भगायें ,
ख़्वाब खो गए जिन आँखों के,
उन नयनों में स्वप्न जगायें।।
अधरों पर मुस्कानों का अब,
मौसम आया है ।
संग में अपने ये अनगिन सी,
खुशियाँ लाया है ।

रश्मि वल्लरी बिछी है पग में,
है उछाह सबकी रग रग में ,
नेह का दीपक गए जलता हो,
तिमिर जीतता कब इस जग में,
अंतर के सब कलुष मिटें,
सन्देशा पाया है ।
संग में अपने ये अनगिन सी,
खुशियाँ लाया है ।

ब्रजेश शर्मा 'विफल'
झांसी म.प्र.

'पिता'

'तुम सृजन कर्ता मेरे... मै मिट्टी ,आकर सृजित कर गये

पालनहार,

अस्तित्व शून्य मेरा, ना हो पश्य आप,

संघर्ष आप करे... संग- हर्ष हमारे

सूर्य भांति तपन तुम्हारा

अवरुद्ध किया तमस पथ...

आभामंडल रचियता तुम...

गुरूत्वाकर्षण से बांध रखा हर एक सदस्य...

तुम ' पिता ' ही हो सकते हो...

क्या अर्पित करूँ तुम्हें....

पिता हो तुम, हर दिवस निकलते हो अर्थ अर्जित करने..

स्वयं विश्राम कहाँ....

श्रम का आवरण डाल निरंतर पथ पर अडिग तुम....

तुम पिता ही हो सकते हो..

सूत्र हो बंधे हम तुमसे...

तुम पिता ही हो.... अस्तित्व हमारा तुमसे ही हैं।

विश्वास जोशी (विशु)

हर घर में दीवाली

दीप जलाने से क्या होगा,जब तक न खुशहाली है।
मन मे दीप जले तब जानूँ,हर घर मे दिवाली है।।
कोई किसी के दिल को जलाता,दीप जलाना छोड़कर।
सब अपनी औकात दिखाते,अपनों से मुँह मोड़कर।।
अपने लिए यहाँ कौन न जीता,कुछ तो पर उपकार करो।
दिवाली में कुम्हारों का सपना भी साकार करो।।
माटी पुत्र कुम्हार के घर मे,जब तक यह कंगाली है।
मन मे दीप जले तब जानूँ,हर घर मे दिवाली है।।
चाहे मिठाई जितनी बांटों,जब तक कड़वा बोली है।
खुशियों से जो भर सकती वह,तेरी खाली झोली है।।
जो भी पटाखे छोड़ के जग में,खूब रसूख दिखाते हैं।
घर के कोने मात पिता,उनके भूखे सो जाते हैं।।
है धिक्कार जो मात पिता की,बन जाते बदहाली है।
मन की दीप जले तब जानूँ,हर घर मे दिवाली है।।

कौशल महन्त

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

हिंदी अखबारों की भ्रष्ट भाषा

आजकल मैं मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के कई शहरों और गांवों में घूम रहा हूं। जहां भी रहता हूं,सारे अखबार मंगवाता हूं। मराठी के अखबारों में बहुत कम ऐसे हैं, जो अपनी भाषा में अंग्रेजी का प्रयोग धड़ल्ले से करते हों। उनके वाक्यों में कहीं-कहीं अंग्रेजी के शब्द आते जरुर हैं लेकिन वे ऐसे शब्द हैं,जो या तो अत्यंत लोकप्रिय हो गए हैं या फिर उनका अनुवाद करना ही कठिन है लेकिन हिंदी के बड़े-बड़े अखबार(जो कृपा करके मेरे लेख भी छापते हैं)को पढ़ते हुए मैं हैरत में पड़ जाता हूं। उनकी कई खबरों में ऐसे वाक्य ढूंढना मुश्किल हो जाता है,जो आसानी से समझ में आ जाएं। इनमें अंग्रेजी के ऐसे शब्द चिपका दिए जाते हैं, जिनका अर्थ समझना ही आम पाठकों के लिए मुश्किल होता है। इसका अर्थ यह नहीं कि मेज पर बैठे पत्रकार अपनी भाषा को भ्रष्ट करने पर उतारु हैं। उनकी चाहत भी यही है कि सरल भाषा लिखी जाए लेकिन वे जल्दबाजी में उलटा काम कर बैठते हैं। कौन शब्दकोश देखे,कौन किसी वरिष्ठ से पूछे,कौन आपस में चर्चा करे। इसके अलावा अखबारों के सम्पादकों और मालिकों की ओर से भी कोई आपत्ति नहीं होती। अखबार बिक रहा है,इसी से वे संतुष्ट हैं। इन्हीं अखबारों के सम्पादकीयों और लेखों में सरल और शुद्ध हिंदी देखकर मेरा मन प्रसन्न हो जाता है। यदि ये लोग थोड़ा ध्यान दे दें तो हमारे हिंदी के अखबार काफी बेहतर हो सकते हैं। उनका प्रभाव भी बढ़ेगा और पाठक-संख्या भी। मैं पोंगापंथी शुद्धतावादी बिल्कुल नहीं हूं। हिंदी में हम अन्य देशी और विदेशी भाषाओं के जितने भी शब्द हजम कर सकें,जरुर करना चाहिए लेकिन हमारे अखबारों और टीवी चैनल तो अंग्रेजी शब्दों की बदहजमी से परेशान है। मैंने अब से पचास साल पहले जब अफगान विदेश नीति पर अपनी पीएच.डी. का शोधग्रंथ हिंदी में लिखा था तब कई जर्मन, फ्रांसीसी,फारसी और रुसी शब्दों का हिंदीकरण कर दिया था। इसी प्रकार नवभारत टाइम्स और 'पीटीआई-भाषा' का सम्पादक रहते हुए मैंने असंख्य देशी और विदेशी भाषाओं के शब्दों का हिंदीकरण किया,जिसे सैकड़ों हिंदी अखबारों ने सहर्ष अपनाया। अंग्रेजी के भ्रष्ट उच्चारणों से कई देशी और विदेशी नामों को पहली बार मुक्ति मिली। हिंदी पत्रकारिता का रुप ही बदल गया। हिंदी संस्कृत की बेटी है और उर्दू समेत सभी भारतीय भाषाओं की बहन है। उसके शब्द-सामर्थ्य का क्या कहना ? उसके सामने बेचारी अटपटे व्याकरण और ऊटपटांग उच्चारण वाली अंग्रेजी कैसे टिक सकती है ? संस्कृत की एक धातु में हजारों नए शब्द बनते हैं और उसकी धातुएं २००० हैं। पत्रकार भाई लोग अपनी इस छिपी हुई ताकत को समझें और थोड़ी मेहनत करें तो हिंदी को भ्रष्ट होने से बचा सकते हैं।

अयोध्या फिर से हुई अयोध्या

आशुकवि-
सूरज नागर उज्जैनी

समय का पहिया घूमा , हर्षित जन मन झूमा
विलुप्त फैजाबाद हुआ, नामकरण निर्विवाद हुआ
पूर्ण हुआ संकल्प, पूरी हुई प्रतिज्ञा
अंकित हुआ अभिलेख में नाम अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या, अयोध्या फिर से हुई अयोध्या
किलकारी ली थी पहली , यहाँ जन्में थे प्रभू राम
सप्त पावन पुरियों में , है ये अयोध्या धाम
टंकित हुआ अभिलेख में नाम अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या, अयोध्या फिर से हुई अयोध्या
सरयू सुन्दर तट के ऊपर, त्रेता जैसी मनी दिवाली
लाखों दीप की झीलमिल से, निशा तमश की हुई उजाली
घोषित हुआ अभिलेख में नाम अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या, अयोध्या फिर से हुई अयोध्या
जहाँ वध ना हो जहाँ युध्द ना हो, है वो जगह अयोध्या
घर है जो इश्वर का है वो,धाम अयोध्या
वर्णित हुआ अभिलेख में नाम अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या
अयोध्या है श्री राम की, अयोध्या के श्री राम
जन्म भूमि राम की, सत्य सकल सुखधाम
दिशा दिशा में गूंजा नाम अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या
अवधपुरी सम प्रिय नहीं कोऊ, कहते थे प्रभु राम
अयोध्या को फिर से अयोध्या कर, योगी ने किया सद काम
धरा गगन में गूंजा नाम अयोध्या
अयोध्या फिर से हुई अयोध्या, अयोध्या फिर से हुई अयोध्या ।

दर्शको को ठग नही पाई फ़िल्म ठग्स ऑफ हिंदुस्तान

इदरीस खत्री

साल की सबसे बड़ी फिल्म ठग नही पाई

समय :- 164 मिनट

अदाकार :- अमिताभ, आमिर, कैथरीना, फातिमा सना, जैकी श्रॉफ, रोनित रॉय, शशांक अरोरा, ल्योड़ ओवेन व अन्य

आधारित :- कन्फेशन ऑफ ठग, फिलीप मेडोस टेलर के उपन्यास (1839) पर, (यह चर्चागत विषय-इस पर अगली समीक्षा)

निर्देशक व पटकथाः- विजय कृष्ण आचार्य उर्फ विक्टर

संगीतः- अजय अतुल

गीतः- अमिताभ भट्टाचार्य

निर्माताः--आदित्य चोपड़ा

भाषाः- हिंदी, तमिल, तेलगू

छायांकनः- मानुष नंदन

इफेक्टः- विशाल आनंद, लुइस ब्रेड्स

वेषभूषाः- रविन्द्र पाटिल

सेटः- रचना मन्डल

स्क्रीन्सः- 5300 भारत, 1500 ओवरसीज़

बजटः- 250 करोड़?(160 90 करोड़)

दोस्तो फ़िल्म के कहानी से पहले फ़िल्म पर चर्चा कर लेते है सीने प्रेमियो का देश के महानायक अमिताभ बच्चन और मिस्टर परफेक्शनिस्ट आमिर खान को साथ मे पर्दे पर देखना निसन्देह स्वपन पूरा होने जैसा ही होगा, आमिर ने फ़िल्म में से 70 आमदनी बतौर मेहनताना मांगी थी जो कि इ यशराज फ़िल्म ने मान ली थी,इस हिसाब से आमिर के खाते में जाएगे 700 करोड़ ?,

फ़िल्म 5300 स्क्रीन्स पर भारत मे जिसमे 4700 स्क्रीन्स में हिंदी, 300 300 में तमिल तेलगू में प्रदर्शित होगी,

फ़िल्म का पहले नाम ठग था, जो कि बाद में ठग्स ऑफ हिंदुस्तान किया गया,

दीवाली की छुट्टियों के कारण 4 दिन का सप्ताहन्त निश्चित ही 100 करोड़ पार करने की उम्मीद की जा सकती है

आमिर की फ़िल्म दंगल ने चायना में 2100 करोड़ का व्यापार किया था वहां पर 85000 सिनेमा घर है

भारत मे लगभग 25000 सिनेमा सिंगल ओर मल्टीप्रेक्स मिला कर

5300 स्क्रीन्स पर प्रदर्शन हैप्पी न्यू इय्यर का रिकॉर्ड 44 करोड़ पहले दिन का टूट सकता है,,,

विक्टर मूल लेखक रहे है इसके पहले धूम 3 निर्देशित कर चुके है, बतौर लेखक गुरू, धूम सीरीज, रॉ वन संवाद लिख चुके है,, बतौर निर्देशन धूम 3, टशन के बाद तीसरी फिल्म है,

कहानी

बात शुरू होती है 1735 ई से, सईद बैग मिर्ज़ा (रोनित रॉय) छोटी सी रियासत रौंकपूर के राजा है,

और ईस्ट इंडिया कम्पनी छल,कपट, लोभ यानी एन केन प्रकारेण पूरे हिन्दोस्तान पर कब्ज़ा करना चाहती है,

यहां भी ब्रिटिश जनरल क्लाइव (लायड ओवन) पहुच जाते है और राजा, पतने, बेटे को जान से मार देते है, राजा की एक बेटी है ज़फिरा जो कि बच्ची है उसे भी मारने की कोशिश की जाती है लेकिन राजा का सिपहसालार खुदाबख्श(अमिताभ) उसे बचा कर निकाल कर ले जाता हैज़फिरा को युद्ध कौशल सिखाई जाती है और वह अपने माँ, पिता, भाई की मौत का बदला लिए बड़ी होती है, 11 साल बीत जाते है,अब खुदाबक्ष और ज़फिरा(फातमा सना) के साथ एक आज़ाद नामक फ़ौज बना लेते है, अंग्रेजो से लड़ने के लिए

इधर फिरंगी मल्लाह(आमिर खान) जिसकी फितरत में धोखा ओर फरेब है, ठगी करके जीवन यापन करता है,

एक बार अंग्रेज उसे धोखा दे देते है और मोत के घाट उतार रहे होते है कि आज़ाद फ़ौज उन के जहाज पर आक्रमण कर देते है उसमें फिरँगी मल्लाह को गोली पड़ जाती है और दुर्घटना वश पड़ी गोली आज़ाद फ़ौज में फिरंगी मल्लाह खुदाबक्ष का चहेता हो जाता है, इलाज के लिए आज़ाद फ़ौज उसे अपने खुफिया ठिकाने पर ले जाती है, फिरंगी अपनी फितरत के चलते अलाबक्ष आज़ाद को पकड़ने के लिए फिरंगी से सौदा पटा लेते है,

फिरंगी इस काम के लिए जेल में बंद एक साथी सनीचर (जीशान अय्यूबी) को साथ ले लेता है, और मिज़ापुर के राजा (शरद सक्सेना) ईस्ट इंडिया से लड़ने के लिए चोरी छिपे आज़ाद फ़ौज़ को हथियार देता है तो इसमें अलाबक्ष पकड़ा जाते है, फिरंगी को ज़फिरा की सुरक्षा का वादा देकर, अब ईस्ट इंडिया कम्पनी आज़ाद फ़ौज़ को पकड़ना चाहती है फिर से फिरंगी के साथ जाल फैलाया जाता है क्योकि खुदाबख्श ज़फिरा की जिम्मेदारी फिरंगी पर डाल देते है तो फिरंगी पूरी आज़ाद फ़ौज़ को लेकर दशहरे के दिन हमले की योजना बनाते है जिसमे मदद करती है नचनिया सुरैया जान(कैटरीना)लेकिन कहानी में आता है ट्विस्ट

इन सब ट्विस्ट ओर टर्न के लिए फ़िल्म देखना पड़ेगी,

फ़िल्म भव्य बजट, भव्य कम्प्यूटर जनित तकनीक, युद्ध दृश्य, ड्रै,

विज्वल इफेक्ट से भरी पड़ी है, साथ ही कुछ ड्रोन दृश्य भी अच्छे है लेकिन किसी फिल्म की रीढ़ की हड्डी होती है कहानी, जो कि 80 के दशक की लगती है,

बस यही फ़िल्म और निर्देशक गच्चा खा गए,

नावेल कन्फेशन ऑफ ठग को इस कदर तोड़ा मरोड़ा गया है कि फ़िल्म में कब देशभक्ति जाग जाती है, कब गायब हो जाती है समझ से परे यानी इतिहास से भरपूर मखोल, देश के भूगोल से भी यही किया गया है क्योंकि राजस्थानी रियासत में समुंद्र किनारा

वेशभूषा पर काम नही किया गया,

गांनो में वश्मल्लु ही आकर्षित करता है शेष काम चलाऊ ही लगे है, कहि कहि पर पार्श्व संगीत दिल को छूता है लेकिन हर जगह नही।

अभिनाभ की गांनो की शायरी ठीक ठाक ही है लेकिन उचित संगीत के बिना गाने मृत हो जाते है,

कैथरीना के लिए ज्यादा कोई काम नही था उससे ज्यादा काम तो खुदाबक्ष की बाज से लिया गया है

भव्य सेट, भव्य फिल्मांकन फ़िल्म की सफलता की ग्यारंटी नही हो सकते,

जब तक अमिताभ फ़िल्म में दिखते है फ़िल्म दौड़ती है शेष समय निर्देशक फ़िल्म से बांध नही पाए

फ़िल्म में जो भी मोड़ आते है दर्शक पहले ही समझ लेते है,

एक बड़ा सवाल ठग के कन्फेशन पर आधारित किताब को देशभक्ति से जोड़ कर भी मखोल उड़ाना ही माना जाएगा

ओर ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक जनरल को मार दिया जाए तो ईस्ट इंडिया कम्पनी दोबारा प्रयास न करेगी कब्जे का यह भी हास्यास्पद ही लगता है

खेर फ़िल्म ने निराश किया

अभिनय में आमिर मंजे हुवे लगते है लेकिन पाइरेट्स के जेक सपेरों से कोसो पीछे लगते है, अमिताभ जो करदे वही अभिनय होता है, फातिमा सना ओर कैटरीना को अभिनय में बहुत सीखना बाकी है, सनीचर की भूमिका में जीशान अय्यूबी अभिनय डिप्लोमा धारी धरती पकड़ अभिनेता है जो कि लगे भी शानदार के साथ अभिनय भी जानदार ओर जीवन्त लगा है,

फ़िल्म देखते समय 80 के दशक की फिल्मों की याद आती है वोभी 2ख18 में,जो कि फ़िल्म के लिए ओर निर्देशक विक्टर के लिए हानिकारक है, फ़िल्म टिपिकल बॉलीवुड मसाला बनाने के चक्कर मे देशभक्ति से भी बाहर हो गए निर्देशक

दीपावली के सप्ताहन्त से फ़िल्म का बजट निकलना आसान होगा

अमिताभ और आमिर को पर्दे पर निहारना फ़िल्म की लागत और कमाई निकाल सकता है,,

फ़िल्म को 2.5 स्टार्स

क्योकि बड़ी उम्मीदें बड़ी निराशा भी लाती है यही हुआ इस फ़िल्म के साथ भी,,

अहिंसा

किशोर छिपेश्वर 'सागर'

राह हिंसा की तुम अपनाना नहीं
जिंदगी बेकार,प्यार जिसने जाना नहीं
राह अपना लो अहिंसा की यारों
शत्रु किसी को भी बनाना नहीं
जहां चल रहा मोहब्बत से मानो
नफरतों को कभी तुम टिकाना नहीं
गले से सभी को लगा लेना तुम
आँखे किसी को दिखाना नहीं
अपनाया राह अहिंसा का बापू ने
पाठ हिंसा का किसी को पढ़ाना नहीं
मिलकर रहों, प्यार ही प्यार से
आग नफरत की कभी लगाना नहीं
खाक हो जाएंगे अपने ही अपनो से
घर किसी का भी तुम जला ना नहीं

कर्म

'आशुतोष'

कल्पनाओं को छोडकर
कर्म को अपनाना होगा
विकृत हो रहे मनःस्थिति
पर काबू पाना होगा।
बहक रहे है सभी के कदम
फैल रहा जीवन में अंधकार
खाली समय में अंतःमन
को झकझोरना होगा
कल्पनाओं को छोडकर
कर्म को अपनाना होगा।
संगत की संस्कारो से
खुद को बचाओ ऐ दोस्त
बिगडती हुई व्यवस्थाओ को
फर्ज से सुधारो ऐ दोस्त
सबको मूल मंत्र अपनाना होगा
कल्पनाओं को छोडकर
कर्म को अपनाना होगा।
अलविदा करो बूरे स्वपन को
अच्छे ख्वाब दिखाओ मन को
ऑखो मे बस रहे कुछ सपने
तुम्हारे ही तो है
पवित्र कमी से पूरा करना होगा
कल्पनाओं को छोडकर
कर्म को अपनाना होगा।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम द्वारा भारतभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाया जा रहा हैं, जिसमे जनमानस को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित कर शपथपत्र भरवाएँ जा रहे है। हस्ताक्षर व्यक्ति के जीवन की सबसे छोटी इकाई है, और यदि व्यक्ति हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ लेता है तो स्वाभाविक तौर पर धीरे-धीरे उसका हिन्दी से प्रेम होना भी स्वाभाविक है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य रखकर वर्ष २०२० तक १ करोड़ भारतीयों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देते हुए शपथ दिलवाई जाएगी। वर्तमान में संस्थान द्वारा देश के ६ राज्यों में इस अभियान को प्रारंभ किया जा चुका है और लगभग ५०००० से ज्यादा लोगों ने शपथपत्र भरकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की शपथ ली हैं। हस्ताक्षर बदलो अभियान से जुड़ने के लिए देश के राजनैतिक, खेल, रंगकर्मी, चलचित्र अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, पत्रकार आदि हस्तियों से भी निवेदन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में कई राज्यों में कार्य चल रहा है।

भाषा सारथी बनें

क्या आप 'भाषा सारथी' बनना चाहते हैं? क्योंकि,

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा।
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा।
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को रोजगार दिलवाने में मदद करनी होगी।
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी।
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा।
- हिन्दी के प्रचार हेतु प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा।
- हिन्दी भाषियों की मदद करना होगी।
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना।
- कार्ययोजना बनाकर लोगो को हिन्दी में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित करना।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ हैं, जो हिन्दी के लिए करनी होगी, यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़े।

सहयोगी इकाईयाँ

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

वादीज़ — www.wadieshindi.com

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी। भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,
हस्ताक्षर : .....
नाम : .....
पिता का नाम :.....
पता:.....
.....
संपर्क:.....
अणुडाक (ईमेल):.....

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दी ग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

कार्यालय -
एस-२०७, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग, इंदौर
(मध्यप्रदेश) ४५२००१
संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू.) ७०६७४५५४५५
अणुडाक- hindigramweb@gmail.com
अंतरताना- www.matrubhasha.org

भाषा सारथी बनाने के लिए मिस काल करें व अपना परिचय व्हाट्सअप करें

९६६ ९८ ९६६९३
९६६ ९८ ९६६९३

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhasha.org

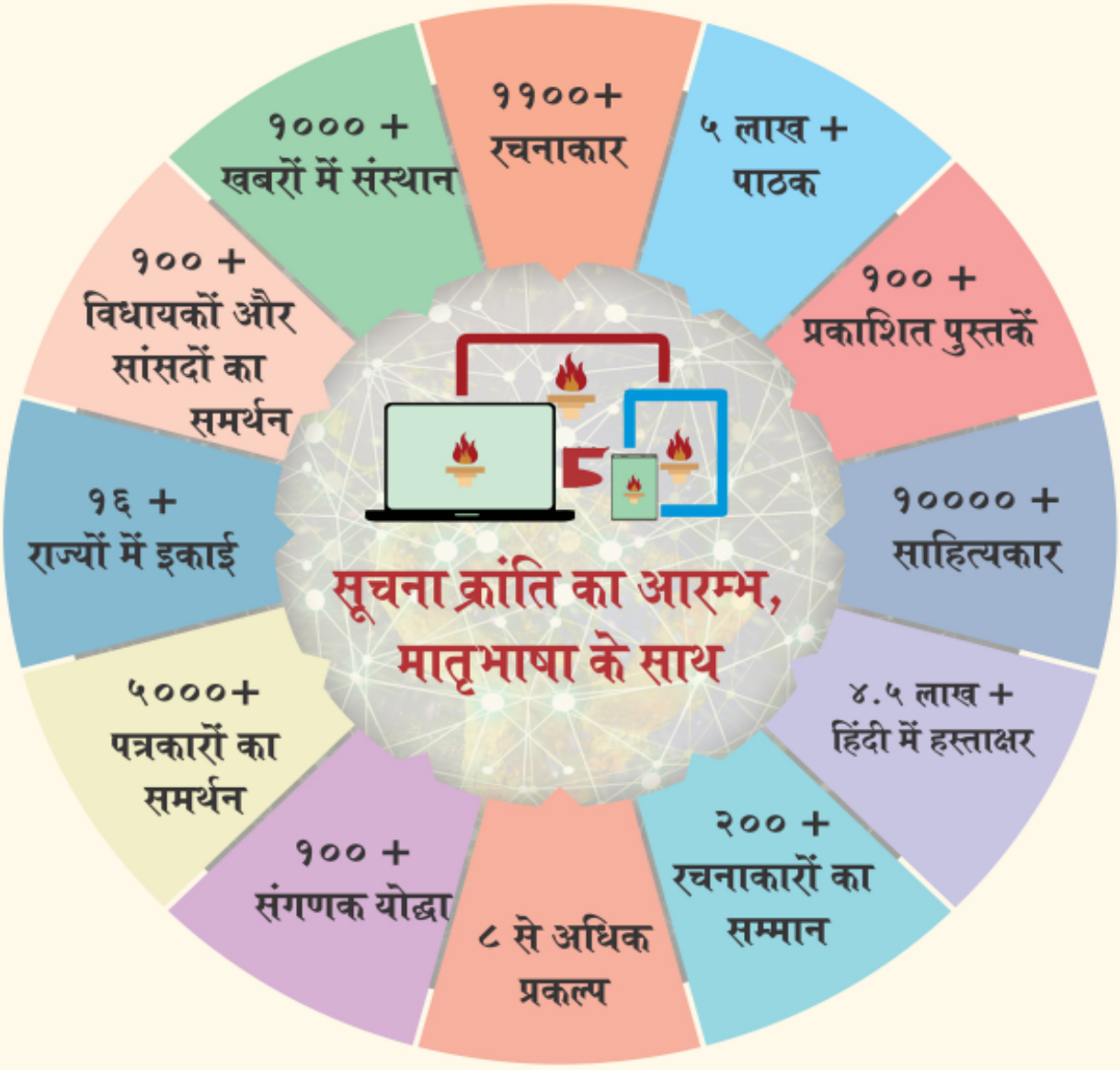

हिन्दी में हस्ताक्षर करें, राजभाषा से राष्ट्रभाषा की ओर बढ़ें

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

जी हाँ, वर्तमान दौर में हिंदी के रचनाकारों की समस्या होती है कि उनकी किताबें बिकती नहीं, प्रकाशक भी इसलिए नवांकुरों को प्रकाशित नहीं करते क्योंकि प्रकाशक को भी विक्रय न होने का भय रहता है। ऐसे स्थिति में नवांकुर कैसे खोजे अपने पाठक ?

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन लाया है अद्भुत विकल्प-मात्र १६ या ३२ पृष्ठ में आपकी रचनाएँ आई एस बी एन (ISBN) क्रमांक के साथ ई-बुक बनवाये, कम प्रतियाँ प्रकाशित करवाएँ और अपने पाठक स्वयं खोजे। जो पाठक की जेब के लिए बोझिल नहीं होगी, और जब आपके पाठकों को आपका लेखन पसंद आएगा तो वे आपकी पुस्तकें भी खरीद कर पढ़ेंगे और इससे आय भी होगी।

- आई एस बी एन
- पाठशोधन
- आवरण अभिकल्प
- ई-बुक
- पुस्तक विमोचन
- प्रचार प्रसार

संपर्क करें
डॉ. प्रीति समकित सुराना
+91- 90094 65259 | +91- 94247 65259
antrashabdshakti@gmail.com
www.antrashabdshakti.com

सेन्स समूह का उपक्रम
अन्तरा शब्दशक्ति